STREAM
नीति
सार

मार्च : २००५

www.streaminitiative.org

संख्या २

संक्षेप में............

मात्स्यिकी एवं जलकृषि में जीविका निर्वाहन के उपाय

................दो या दो से कम पृष्ठों में

सार

यह किस विषय के बारे में है?
उन लोगों के जीविका का विश्लेषण एवं सहायता करना जिनके जीविक निर्वाहन में मात्स्यिकी एवं जलकृषि शामिल है।

इसे पढ़िए यदि...............
.............आप लोगों की वास्तविकता, गरीबी, संपदा एवं संदर्भ जिसमें वे रहते हैं, के बारे में अधिक जानना चाहते हैं।

इसमें शामिल हैः

- दरिद्रता दूर करने में राष्ट्रीय मत्स्य प्रशासन में बढ़ती महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करना
- जीविका निर्वाहन के विश्लेषण एवं उन्नति के लिए जीविका उपाय को समझने के लिए क्षमता गठन।
- लोगों के पसंद के मद्देनजर, संपदा जिसमें वे नियंत्रण कर सकते हैं एवं परिस्थिती जिससे वे दूसरे जीविकाओं में अपने को ढाल सकते हैं, इस पर विचार करना।
- जिसके लिए नीति एवं सेवा का विकल्प तैयार किया जा रहा है उन लोगों के जीविका के प्रसंग पर आधारित राष्ट्रीय स्तर पर उन्नत कौशल गठन करना (जैसे, एन.एस.एस.डी., सी.डी.एफ., पी.आर.एस.पी.)
- कृषक एवं मत्स्य कृषकों के दरिद्रता के कारण एवं उससे संबंधित नीति की प्रतिक्रिया के संबंध को मजबूत करना।
- जीविका निर्वाहन विश्लेषण में प्रतिभागी उपकरण का प्रयोग करते हैं, यह समुदाय के भीतर दल द्वारा प्रायः प्रयोग किया जाता है।
- जीविका निर्वाहन विश्लेषण एवं उपाय काम करने का एक लचीला मार्ग है जो कार्यसूची बनाने में लोगों को केन्द्र में रखता है न कि जलीय संपदा प्रबंधन को।
- हम लोगों की जीविका निर्वाहन के बारे में प्राप्त शिक्षा को दूसरे उपयोगी विकल्प के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं, जिससे गरीबों के उद्देश्य के लिए हमारे प्रयास को परिवर्तन एवं पर्यवेक्षण तथा मूल्यांकन किया जा सके।

इस नीति सार से अगर आप कोई एक चीज कर सकते हैं, तो इसे कीजिए...........

दक्षता गठन कीजिए, संगठन में कार्य करने की पद्धति की रूपरेखा तैयार कीजिए जो मात्स्यिकी पेशोवरों को लोगों के, विशेष कर उन लोगों के जिनके पास सीमित साधन है, जलीय संपदा के प्रबंधन के विषय को समझाने तथा सहायता के कार्य में दक्ष होने में सहायता प्रदान करती है।

सार...............

अच्छी नीति एवं सेवा प्रदान करना जो लोगों के उद्देश्यों को सार्थक रूप से सहायत करती है जो भिन्न विषयों पर आधारित होती है, कई बार यह कार्यसूची से मेल नहीं खाती। इसके तीन सबसे महत्वपूर्ण विषय हैः लोगों के जीविका निर्वाहन के विषय में समझने तथा विश्लेषण करने की क्षमता प्रदान करना, राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में विवेचना करना एवं अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा पहल करना, जो राष्ट्रीय स्तर के विकास नीति के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

- एशिया-पेसिफिक में जलीय संपदा के प्रबंधन में राष्ट्रीय सरकर की सहायता मुख्यतः शोधकार्य एवं तकनीकी विकास तक ही सीमित है। फिर भी, हम यह स्वीकार करते हैं कि गरीबी दूर करने में राष्ट्रीय मात्स्यिकी प्रशासन की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है, हमें गरीबों के जीविका निर्वाहन में मत्स्यपालन की भूमिका के संबंध को अच्छी तरह समझना होगा।
- जीविका निर्वाहन का विश्लेषण एवं विकास में जीविका निर्वाहन के उपाय को समझने के लिए क्षमता गठन अत्यावश्यक है।
- जीविका निर्वाहन विश्लेषण, स्थिति, संपदा के प्रयोग के उपाय, गरीबी, विकल्प एवं चुनाव को समझने का सुव्यवस्थित परन्तु लचील मार्ग है, जो समुदाय के अन्दर व्यक्ति एवं समूह से सीखने के लिए प्रतिभागी पद्धति का प्रयोग करती है। यह कोई जटिल प्रक्रिया नहीं है परन्तु अधिकांश समय लोगों को ऐसे भूमिकाओं में शामिल किया जाता है जो उनके लिये नया है।
- जीविका निर्वाहन के उपायों को ग्रहण करने में शामिल हैः लोगों की पसंद, संपदा जिस पर वे नियंत्रण कर सके एवं परिस्थिति जिसमें यह सहायक जीविका निर्वाहन में ढाला जा सके। इसका अर्थ है कार्यसूची के केन्द्र में स्पष्ट रूप से लोगों को स्थान दिया गया है जलीय संपदा को नहीं।
- जलकृषि अथवा मात्स्यिकी अथवा कृषि की जगह हमें जलीय संपदा प्रबंधन पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना होगा क्योंकि केवल जलकृषि अथवा मात्स्यिकी अथवा कृषि कार्य को छोड़ कर जलीय संपदा के प्रबंधन के क्षेत्र में हमारी दृष्टि को और विस्तृत करना चाहिए जो हमारे कार्यसूची को एक उप-क्षेत्र में सीमित न रहने में मदद करेगा, जब हम जानते हैं कि मनुष्य का जीवन जटिल है, हम यह अच्छी तरह से जानते हैं कि जो गरीब है वे जीविका निर्वाहन के विकल्प के रूप में भिन्न-भिन्न कार्य की मदद लेते हैं, जैसे- जलीय संपदा के प्रबंधन के साथ जुड़े अन्य कार्यों से जुड़े रहना, जैसे कृषि, मत्स्य पकड़, जलकृषि, मजदूरी, इस क्षेत्र से जुड़े यंत्रों का निर्माण एवं आपूर्ति इत्यादि।

→ मात्स्यिकी प्रशासन में कई लोग तकनीकी रूप से प्रशिक्षित है परन्तु उन्हें जीविका निर्वाहन विश्लेषण तथा जीविका निर्वाहन के उपाय को कार्यान्वित करने के लिए क्षमता गठन की आवश्यकता है।

संक्षेप में.................जीविका निर्वाहन के उपाय के बारे में

- जीविका निर्वाहन के उपाय के बारे में गहन समझ के विकास, लोगों को विकास प्रक्रिया के केन्द्र में रखना एवं लोग किस प्रकार अपने संपदा का प्रयोग करते हैं इस बारे में एक-दूसरे के साथ सूचनाओं का आदान-प्रदान करना आदि के बारे में है।

- जीविका निर्वाहन के उपाय पर काम करना असंतुलित महत्वपूर्ण संपर्क को चिन्हित एवं पुनर्विवेचना करने में हमारी सहायता करती है, सिर्फ एक दृष्टिकोण (प्रभावशाली) से विचार न करके उसके अलावे अनेक दृष्टिकोणों से किसी विषय को देखने एवं समझने में सहायता करती है।

- मत्स्य पालन के क्षेत्र में जीविका निर्वाहन के उपाय के बढ़ते व्यवहार के दो संभाव्य प्रभाव हो सकते हैः कृषक एवं मत्स्य कृषकों के दरिद्रता के कारण एवं उससे संबंधित नीति के प्रतिक्रिया के संपर्क का मजबूत होना एवं गरीब लोगों के जीविका निर्वाहन में जलीय संपदा के विशाल भूमिका को सबके सामने स्पष्ट रूप से प्रकाशित करना।

- जीविका निर्वाहन के उपायोग की सहायता से हम लोगों की जीविका निर्वाहन के बारे में प्राप्त शिक्षा को दूसरे उपयोगी विकल्प के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं, जिससे गरीबों के उद्देश्य के लिए हमारे प्रयास को परिवर्तन एवं पर्यवेक्षण तथा मूल्यांकन किया जा सके।

- यदि जीविका निर्वाहन के उपाय स्थानीय सेवा प्रदान के उन्नति के क्षेत्र में एवं नीति तैयार करने के क्षेत्र में उपयोगी है तब यह वृहद क्षेत्र में जलीय स्तर पर योगदान दे सकता है एवं राष्ट्रीय स्तर पर उन्नति के कौशल के गठन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय कर्तव्य एवं जीविका निर्वाहन के उपायः

- कार्यसूची २१ रियो अर्थ सम्मीट के कार्य योजना, आर्थिक, परिवेश एवं सामाजिक दीर्घस्थायिता को निश्चित करने के लिए देशों को दीर्घकालीन विकास में राष्ट्रीय कौशल (ग़्च्च्क़) निर्माण का आह्वान।

- विश्व बैंक व्यापक विकास के ढाँचे को उत्साहित करता है (क्क़्क़)

- दरिद्रता कम करने के लिए प्रभाव के साथ ऋण मुक्ति के संयोजन के लिए विश्व बैंक एवं अंतर्राष्ट्रीय वित्तिय कोष दरिद्रता कम करने की कौशल पत्रिका (घ्ड्च्घ्) का प्रयोग करते हैं, सभी देशों में नीति व्यवस्था के केन्द्रबिन्दु को विश्व बैंक एवं अंतर्राष्ट्रीय वित्तिय कोष सुविधाजनक ऋण दे रही है।

- एन.एस.एस.डी., सी.डी.एफ. एवं पी.आर.एस.पी. राष्ट्रीय स्तर के विकास नीति का एक विवरण है जिसके अंतर्गत जीविका निर्वाहन के उपाय भी शामिल है।

- एशिया पेसिफिक में राष्ट्रीय स्तर पर उन्नति के कौशल में जलीय संपदा का प्रबंधन गरीबों के जीविका निर्वाहन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इस विषय पर अन्य दस्तावेज एवं सूचना स्रोत का संयोजनः

- ब्रिटेन के अंतर्राष्ट्रीय विकास विभाग द्वारा प्राप्त विकास के उपाय की तुलना पर १८ पृष्ठों वाला मार्गदर्शिका http://www.livelihoods.org/info/guidance_sheets_pdfs/section6.pdf

- जीविका निर्वाहन के उपाय पर ४ पृष्ठों वाला बेहतर कार्य करने की निर्देशावली- क्षमता गठन एवं विश्लेषण http://www.streaminitiative.org/Library/bpg/index.html

- निम्न मेकाँग नदी के बेसीन में जीविका निर्वाहन एवं मत्स्य पालनः जीविका निर्वाहन के उपाय के धारणा को समझना। मेकाँग विकास क्रम सं. ५ http://www.wtreaminitiative.org/Library/pdf/pdf-india/FisheriesLivelihoodsStudy.pdf

यह कहाँ से आया?

यह क्रमबद्ध नीति सार स्ट्रीम (सपोर्ट टू रिजनल अक्वाटिक रिसोर्स मैनेजमेन्ट) जो नाका (नेटवर्क ऑफ अक्वाकल्चर सेन्टर्स इन एशिया पेसिफिक) का एक उपक्रम है, के द्वारा तैयार किया गया है।

नीति संक्षिप्त सार संख्या २ नीति सार संख्या १ का परवर्ती क्रम है जो नीति परिवर्तन में सहमती एवं लोगो को शामिल करने के बारे में है। यहाँ पर एफ.ए.ओ. तकनीकी सहयोग परियोजना ''एशिया पेसिफिक में जलीय संपदा में प्रबंधन द्वारा दरिद्रता दूर करने में सहायता'', में जीविका निर्वाहन विश्लेषण एवं जीविका निर्वाहन के विषय में विचारों का आदान-प्रदान का वर्णन किया गया है।

अधिक जानकारी के लिए देखें www.streaminitiative.org/Library/India/india.html या संपर्क करें

स्ट्रीम, नाका, सरस्वादी बिल्डिंग, डी.ओ.एफ कॉम्प्लेक्स, करसकार्ट युनिवर्सिटी, लदायो, बैंकाक १०९००, थाईलैण्ड, फैक्स (662) 561-1727, फोन (662) 561-1728